करेंट अफेयर्स 21 सितंबर 2022

आरबीआई ने सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया को पीसीए फ्रेमवर्क से हटाया

भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) ने सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया को अपने प्रॉम्प्ट करेक्टिव एक्शन फ्रेमवर्क (PCAF) से हटा दिया, जब ऋणदाता ने न्यूनतम नियामक पूंजी और शुद्ध गैर-निष्पादित संपत्ति (NNPA) सहित विभिन्न वित्तीय अनुपातों में सुधार दिखाया। आरबीआई ने अपने उच्च शुद्ध एनपीए और संपत्ति के नकारात्मक रिटर्न (आरओए) के कारण जून 2017 में बैंक पर पीसीए मानदंड लागू किया था। सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया के प्रदर्शन की समीक्षा करने के बाद, आरबीआई ने बैंक पर प्रतिबंध हटाने का फैसला किया।

पीसीए फ्रेमवर्क क्या है:

पीसीए मानदंड एक पर्यवेक्षी उपकरण है और इसे तब लगाया जाता है जब कोई बैंक पूंजी पर जोखिम भारित संपत्ति अनुपात (सीआरएआर), शुद्ध एनपीए और परिसंपत्तियों पर रिटर्न (आरओए) पर कुछ नियामक सीमाओं का उल्लंघन करता है।

- आरबीआई ने 2002 में तत्काल सुधारात्मक कार्रवाई (पीसीए) की योजना शुरू की।
- 2018 की शुरुआत में पीसीए ढांचे के तहत 12 बैंक थे। इनमें से 11 पीएसबी थे।
- पुनर्पूंजीकरण और सुधारात्मक उपायों के कारण मार्च 2019 तक पीसीए ढांचे के तहत केवल छह बैंक (सभी पीएसबी) थे।
- उद्देश्य - शीघ्र सुधारात्मक कार्रवाई या पीसीए एक ढांचा है जिसके तहत कमजोर वित्तीय मैट्रिक्स वाले वित्तीय संस्थानों को आरबीआई द्वारा निगरानी में रखा जाता है।
- अब तक, RBI ने केवल बैंकों पर PCA लगाया था। अब, पीसीए ढांचे का विस्तार एनबीएफसी तक भी कर दिया गया है।
- यह कदम आईएलएंडएफएस, डीएचएफएल, श्रेय समूह और रिलायंस कैपिटल जैसी बड़ी एनबीएफसी के पिछले कुछ वर्षों में वित्तीय संकट में पड़ने के मद्देनजर उठाया गया है।
- प्रयोज्यता - एनबीएफसी के लिए पीसीए ढांचा 31 मार्च, 2022 को या उसके बाद उनकी वित्तीय स्थिति के आधार पर 1 अक्टूबर, 2022 से प्रभावी होता है।
- यह ढांचा सभी जमा स्वीकार करने वाली एनबीएफसी पर लागू होगा, सरकारी कंपनियों को छोड़कर, और सभी जमा न लेने वाली एनबीएफसी मध्यम, ऊपरी और शीर्ष परतों में।
- निहितार्थ - यह एक स्वागत योग्य कदम है क्योंकि यह खराब उधारदाताओं को इस मुद्दे को एक तरफ रखने के बजाय बदतर होने से रोकेगा।
- सुरक्षित एनबीएफसी एक सुरक्षित समग्र वित्तीय प्रणाली में तब्दील हो जाएंगी।
- एनबीएफसी के लिए पीसीए ढांचे की 3 साल बाद समीक्षा की जाएगी।

ट्रैकिंग संकेतक क्या हैं:

• केंद्रीय बैंक तीन संकेतकों को ट्रैक करेगा

o जोखिम भारित आस्तियों की तुलना में पूंजी अनुपात (सीआरएआर) - यह बैंक की उपलब्ध पूंजी है जिसे बैंक के जोखिम-भारित ऋण एक्सपोजर के प्रतिशत के रूप में व्यक्त किया जाता है।

o टियर-I उत्तोलन अनुपात - यह एक बैंकिंग संगठन की मुख्य पूंजी और उसकी कुल संपत्ति के बीच का संबंध है।

o गैर-निष्पादित निवेश (एनपीआईएस) सहित शुद्ध गैर-निष्पादित परिसंपत्तियां (एनएनपीएएस)। एनपीए वे ऋण हैं जिनके लिए मूलधन या ब्याज भुगतान 90 दिनों से अधिक की अवधि के लिए अतिदेय रहा

प्रमुख निवेश कंपनियों (सीआईसी) के मामले में, आरबीआई निम्नलिखित पर नज़र रखेगा:

समायोजित निवल मालियत/कुल जोखिम भारित आस्तियां।

या उत्तोलन अनुपात

या एनएनपीए, एनपीआई सहित।

• उपर्युक्त संकेतकों के तहत तीन जोखिम सीमाओं में से किसी के उल्लंघन के परिणामस्वरूप पीसीए का आह्वान किया जा सकता है।

सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया के मामले में:

आरबीआई ने मंगलवार को एक विज्ञप्ति में कहा, "यह नोट किया गया था कि 31 मार्च, 2022 को समाप्त वर्ष के लिए बैंक के मूल्यांकन के आंकड़ों के अनुसार, बैंक पीसीए मानकों का उल्लंघन नहीं कर रहा है।" बैंक ने एक लिखित प्रतिबद्धता प्रदान की है कि वह निरंतर आधार पर न्यूनतम नियामक पूंजी, शुद्ध एनपीए और उत्तोलन अनुपात के मानदंडों का पालन करेगा। मार्च 2022 को समाप्त वित्तीय वर्ष में, बैंक का शुद्ध एनपीए अनुपात 3.97 प्रतिशत था, जो मार्च 2017 को समाप्त वित्त वर्ष में 10.20 प्रतिशत था। जून 2022 को समाप्त तिमाही में, इसका शुद्ध एनपीए 3.93 प्रतिशत हो गया। 31 मार्च, 2021 को समाप्त वित्त वर्ष के दौरान, इसका सीआरएआर 31 मार्च, 2017 के 10.95 प्रतिशत की तुलना में 13.84 प्रतिशत से बेहतर हुआ। जून 2022 में, सीआरएआर 13.33 प्रतिशत था।

21 सितंबर को अंतर्राष्ट्रीय शांति दिवस मनाया जाता है

अंतर्राष्ट्रीय शांति दिवस 21 सितंबर को विश्व स्तर पर मनाया जाता है। यूनाइटेड नेशनल जनरल असेंबली 24 घंटे के लिए अहिंसा और युद्धविराम का पालन करके राष्ट्रों और लोगों के बीच शांति के आदर्शों को बढ़ावा देकर इस दिन को चिह्नित करती है।

इस वर्ष की थीम "नस्लवाद को समाप्त करें" है। शांति का निर्माण करें। " संयुक्त राष्ट्र महासभा ने इसे 24 घंटे अहिंसा और संघर्ष विराम के माध्यम से शांति के आदर्शों को मजबूत करने के लिए समर्पित दिन के रूप में घोषित किया है।

अंतर्राष्ट्रीय शांति दिवस का प्रतीक क्या है?

शांति बेल को 1954 में जापान के संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा दान किया गया था। यह वर्ष में दो बार घंटी बजाने की परंपरा बन गई है: वसंत के पहले दिन, वर्नल विषुव पर, और 21 सितंबर को अंतर्राष्ट्रीय शांति दिवस मनाने के लिए। .

अंतर्राष्ट्रीय शांति दिवस 2022: इतिहास

अंतर्राष्ट्रीय शांति दिवस की स्थापना 1981 में संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा की गई थी। दो दशक बाद, 2001 में, महासभा ने सर्वसम्मति से इस दिन को अहिंसा और संघर्ष विराम की अवधि के रूप में नामित करने के लिए मतदान किया। अंतर्राष्ट्रीय शांति दिवस पर इस वर्ष का संयुक्त राष्ट्र पृष्ठ सीमाओं पर इक्का-दुक्का भेदभाव पर प्रकाश डालता है।

चीन को पछाड़ श्रीलंका के सबसे बड़े द्विपक्षीय ऋणदाता के रूप में उभरा भारत

भारत श्रीलंका के लिए सबसे बड़ा द्विपक्षीय ऋणदाता बन गया और चीन से आगे निकल गया। 2022 के चार महीनों में, भारत ने श्रीलंका को कुल 968 मिलियन अमेरिकी डॉलर का ऋण प्रदान किया है। 2017-2021 से पिछले पांच वर्षों में चीन श्रीलंका का सबसे बड़ा द्विपक्षीय ऋणदाता रहा है।

एशियाई विकास बैंक (एडीबी) पिछले पांच वर्षों में सबसे बड़ा द्विपक्षीय ऋणदाता रहा है।

- 2021 में, एशियाई विकास बैंक (ADB) द्वारा श्रीलंका को कुल 610 मिलियन डॉलर प्रदान किए गए थे।
- भारत ने श्रीलंका को 4 अरब डॉलर की खाद्य और वित्तीय सहायता प्रदान की है।
- भारत ने अगस्त 2022 में श्रीलंका को 21,000 टन उर्वरक सौंपे।
- 2022 की शुरुआत से ही श्रीलंका आर्थिक संकट से जूझ रहा है और सरकार की चूक ने स्थिति को और खराब कर दिया है।
- देश विदेशी ऋणों का ऋणी है और गंभीर खाद्य और ईंधन की कमी से जूझ रहा है।

- आर्थिक संकट ने देश में बड़ी संख्या में लोगों को प्रभावित किया है।

महाराष्ट्र के दौलताबाद किले का नाम बदलकर 'देवगिरी' किले रखा जाएगा

महाराष्ट्र पर्यटन मंत्रालय ने दौलताबाद किले का नाम बदलकर देवगिरी करने का फैसला किया है जो औरंगाबाद के पास स्थित है। यह फैसला शिवसेना प्रमुख उद्धव ठाकरे के बाद आया है। यह एक राष्ट्रीय विरासत स्मारक है, जिसका रखरखाव भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) द्वारा किया जाता है। इससे पहले महाराष्ट्र के पूर्व मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे का नाम बदलकर औरंगाबाद संभाजीनगर कर दिया गया था।

दौलताबाद किले का नाम बदलकर देवगिरी करने का फैसला शिवसेना प्रमुख उद्धव ठाकरे द्वारा सेना फुट सैनिकों की लंबी मांग के बाद औरंगाबाद का नाम बदलकर संभाजीनगर करने के बाद आया।

दौलताबाद किले के बारे में

दौलतपुर किला महाराष्ट्र के औरंगाबाद के पास देवगिरी गांव में स्थित एक ऐतिहासिक किलेदार गढ़ है। यह पहले यादव राजवंश की राजधानी थी और कुछ समय के लिए दिल्ली सल्तनत की राजधानी थी। 14 वीं शताब्दी में मोहम्मद तुगलक द्वारा किले का नाम बदलकर दौलताबाद कर दिया गया था, जिन्होंने दक्षिणी भारत में सैन्य अभियानों के आधार के रूप में इसके महत्व को समझा और अपनी राजधानी बनाने के विचार की कल्पना की। किले को बाद में कुब्बतुल इस्लाम के नाम से जाना गया और इस नाम से सिक्के ढाले गए।

RACE IAS